

[illegible]

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ निःशेषिये माहात्मने सर्वलोकहितनेत॥ गुणद्वन्द्वतनूदिर्व्यसर्वश्लाकापका
 नृक॥६॥ अतिमह्यं कृत्यमात्रं पवनमिदं वीथना ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वभयविमर्दकम् ॥७॥
 सर्वनाशपणमर्तं सर्वपापनिवानर्तं ॥ अतीनामग्निकनेर्षमायुष्टद्विकर्तृत्वमम ॥८॥ यदिह
 कासिमग्नेनि (गुपनीयं प्रयत्नतः ॥ अग्निं सर्वतर्कपूततुक्कुक्षुप्रमहं वनि ॥९॥ ॥
 ॐ अस्य श्रीपिप्लवर्दिमृषिर्गतिचन्द्रः ॥ निदवता अंकीर्जो निष्पन्नार्थमिदं किंकालपूनी
 यतिकीलकं अकालापमृत्युनिवानर्तार्थं जपविनियोगः ॥ १० ॥ अर्चिन्नासकनं न्यासदहनं
 सप्तमाचनं ॥ महर्षिर्मूर्ध्नि नित्यं मुखवद्व्यर्तन्यं सत् ॥ ११ ॥ जान्वास्तु दनवर्तन्यं पादय

[illegible]

कन्यसत ॥१८॥ मार्जनी ॥ कन्यसदाहा ॥ मरुतूजाय नमः ॥ उर्ध्व स्नाकनिवासाय ॥ पोष्य
 दयै न्यसत ॥१९॥ नमः कालः ॥ पुष्य ॥ माघ ॥ वायु ॥ दन ॥ न्यसत ॥ मन्त्र ॥ गत ॥ यन ॥ मी ॥ स ॥ क ॥ न्य
 स ॥ द ॥ ग ॥ ल ॥ गु ॥ री ॥ त ॥ थ ॥ ॥२०॥ उर्ध्व ॥ न्य ॥ स ॥ व ॥ र ॥ म ॥ स ॥ नमः ॥ हि ॥ वा ॥ रु ॥ वा ॥ य ॥ च ॥ ॥ वे ॥ न ॥ र ॥ वी ॥ वि ॥ न्य ॥ स ॥ क ॥ त ॥ व
 नमः ॥ सी ॥ व ॥ र ॥ का ॥ य ॥ च ॥ ॥२१॥ ऊ ॥ च ॥ यो ॥ रा ॥ व ॥ य ॥ र्थ ॥ ॥ र ॥ न ॥ वा ॥ य ॥ नमः ॥ स ॥ द ॥ ॥ आ ॥ वा ॥ र ॥ र्थ ॥ द ॥ य ॥
 ॥ र ॥ व ॥ र ॥ थ ॥ च ॥ नमः ॥ स ॥ द ॥ ॥ ॥२२॥ द ॥ क ॥ य ॥ र्थ ॥ च ॥ न ॥ य ॥ ॥ नमः ॥ आ ॥ वा ॥ द ॥ म ॥ च ॥ क ॥ ॥ न्य ॥ स ॥ द ॥ ॥ ॥
 र्थ ॥ पा ॥ दा ॥ क ॥ ॥ उ ॥ क ॥ प ॥ र्थ ॥ ग ॥ रा ॥ य ॥ च ॥ ॥२३॥ न्य ॥ ॥ अ ॥ न्म ॥ ल ॥ या ॥ द ॥ य ॥ ॥ अ ॥ ग ॥ रा ॥ य ॥ ग ॥ न ॥ य ॥ नमः ॥ नमः ॥ स
 व ॥ र्ज ॥ त ॥ ॥ अ ॥ व ॥ त ॥ य ॥ स ॥ वी ॥ गु ॥ ल ॥ न्य ॥ ॥ अ ॥ न्म ॥ ॥२४॥ न्य ॥ स ॥ द ॥ ॥ ॥ द ॥ य ॥ वि ॥ र्थ ॥ नमः ॥ उ ॥ क ॥ त ॥ ना ॥ य ॥ च ॥ ॥

विष्णुतावययः ४ दयविष्टतमायच ४ ॥ २५ ॥ जानद्वयधनिष्ठाच न्य सत्कृत् नवनम ४ ॥ उन्न
दयवानुलङ्घन्य सत्कालरुतनम ४ ॥ २६ ॥ पर्वराष्ट्रन्य (४) नमः कयपूठधनायच ॥ २७ ॥ उन्न
राष्ट्रच कनालाय नमस्तदा ४ ॥ २८ ॥ नवतीचन्य सत्तालो नमामस्तु चनायच ॥ २९ ॥ (४) न्य (४)
दार्ष्ट्र नमः ४ ॥ मतनायच ४ ॥ ३० ॥ नमो ह्यगिस्तयनित्यं यमीस्तद्वयन्य (४) त ॥ द्वादित्य (४)
किर्त्तिका ३३ नमस्तैल पियायच ४ ॥ ३१ ॥ नाहिनीतावययः ४ नमस्तैलवययः ४ ॥ मृगन्य
(४) द्वादित्य (४) नमस्तैलवययः ४ ॥ ३२ ॥ द्वादित्यतावययः ४ नमस्तैलवययः ४ ॥ पूनवययः
मूर्ध्निवाय नमो वैयापययः ४ ॥ ३३ ॥ तिथीन्य सत्कृत्वा हो नमस्तैलवययः ४ ॥ सार्पन्य सत्कृत्

मवाहो उग्रहावायतनमः॥३२॥ मर्धा विरावयत्क (६४) नमस्तस्मै धनि (६॥) मखन्य मर्ग
 र्चनमः॥ कुन्य हायच॥३३॥ रावयद कनावर्क्य पाद्य पाद्यगिनः॥ रावयद कनाव
 यीह सार्क्य धिनेनमः॥३४॥ त्वाष्ट्रन्य (६६) दकक (६६) दककाना न्न पियायच॥ त्वाष्ट्रन्य सद्दामक
 (६६) नमस्तस्मै मयायत॥३५॥ विष्णुस्य दकन ग पु नमस्तस्मै न दृष्टय॥ मर्गन्य सद्दामन ग न मा
 (६६) लाचनायच॥३६॥ धार्कन्य सद्दामिन सि नमस्तस्मै वरुकायच॥ विष्णुस्य हावयद्वीर्य स (६६)
 कोलायतनमः॥३७॥ प्रीतिगार्ग्य वाम (६६) महामर्ग नमस्तस्मै त॥ नग्य सन्धावायय्य (६६)
 गीर्वाणायतनमः॥३८॥ होराग्य हावयद्वा सि स (६६) रुला सनायच॥ (६६) र्गन्य हावयत्क

र्गन्य (६६) धात्मनमः॥३९॥ नमस्तस्मै क्रायातिगर्ग्य रुन्य स (६६) विरावयत्क॥ नमस्तस्मै सद्दहाय
 कुन्य मर्ग्य धिनेनमः॥४०॥ धर्तन्य सद्दकवा दृष्ट क्रायायुतायच॥ नमस्तस्मै (६६) मर्गन्य
 सद्दययतनमः॥४१॥ तत्कुर्य नन्य सद्दुर्ग नित्यानन्दायतनमः॥४२॥ तितन्य निवीधच कोलन्य
 यनमन्य (६६) त॥४३॥ कुर्वतर्ग्य गुलीमूल स (६६) रुक्ययतनमः॥ व्याघाते हावयद्दामः॥ वाद
 दृष्ट क्रायच॥ रुष्यर्ग्य तन्मूल स (६६) रुत सैता पितनमः॥४४॥ तत्कुर्य नन्य सद्दुर्ग सान्दा
 यनमस्तस्मै॥४५॥ दितन्य निवीधच नमस्तस्मै लाग्नयनमः॥४६॥ सिद्धितान्य निवीधच न्य सत्का
 लान्मननमः॥ व्यातिगार्ग्य कनाय पु न्य सत्कालकृतनमः॥४७॥ वनियोत्सदक्या (६६) स (६६) कालव

त नम ॥ पत्रिचं धावय दाम पा ॥ ४४ ॥ ध्या न्य भ द को न सी ॥ धो तु भि व वे काल सा क्रि
(४५) ॥ त क्का न्वा रा व य सि धि म्हा द दाय त न म ॥ ४५ ॥ सा ॥ ध्या न्य भ द को न सी ॥ धो धा ना य त न म
४ ॥ न्द स र द गु ली सी ॥ धो ४६ ॥ त म्हा द दाय त न म ॥ ४६ ॥ न्द स र द गु ली सी ॥ धो ४७ ॥ त म्हा द दाय त न म ॥
वृ क्क था ग चि रा क्का न्वा न्द स र द गु ली सी ॥ धो ४८ ॥ त म्हा द दाय त न म ॥ ४८ ॥ न्द स र द गु ली सी ॥ धो ४९ ॥ त म्हा द दाय त न म ॥
न्य भ द को न सी ॥ धो ५० ॥ त म्हा द दाय त न म ॥ ५० ॥ च म्हा द दाय त न म ॥ ५१ ॥ त म्हा द दाय त न म ॥ ५१ ॥ च म्हा द दाय त न म ॥
वान वे रा व य द क्क सी र न क न म्हा द दाय त न म ॥ ५२ ॥ त म्हा द दाय त न म ॥ ५२ ॥ च म्हा द दाय त न म ॥ ५३ ॥ त म्हा द दाय त न म ॥
लं च रा व य द क्क न म्हा द दाय त न म ॥ ५४ ॥ त म्हा द दाय त न म ॥ ५४ ॥ च म्हा द दाय त न म ॥ ५५ ॥ त म्हा द दाय त न म ॥

संक्षिप्तमात्राय सर्वतिका नमस्तुते ॥ ५३ ॥ विद्यविद्यावयद्विष्टिनमामन्युगता ॥ ५४ ॥ मि
त्रपिष्टवसुवनिष्टावधर्षच ॥ ५५ ॥ मूर्ध्नीष्टदक्रयादरावयनम ॥ ५६ ॥ गणभयस्तुकाय
श्वचनायस्तुपि ॥ ५७ ॥ ५५ ॥ पूनद्राष्टागमस्तुव ॥ ५८ ॥ विष्टस्तुया ॥ मूर्ध्नीष्टवामपाद
वयनम ॥ ५९ ॥ सन्युवतायस्तुयाय ॥ निष्टाष्टायायगनम ॥ ६० ॥ सिद्धाष्टनमस्तु
नमस्तुते ॥ ६१ ॥ वक्रिनकैवर्चव ॥ वक्राष्टमया ॥ निकाता ॥ मूर्ध्नीष्टदक्रहस्त
वयनम ॥ ६२ ॥ लग्नोदयायदीर्घाय ॥ मार्गिष्टदक्रदृष्टाय ॥ वक्रायवातिकुनाय ॥ नमस्तु
मदृष्टाय ॥ ६३ ॥ वामस्तुनश्वर्यव ॥ ६४ ॥ गणभयनमस्तुते ॥ गिष्टिष्टाष्टिष्टपूषा ॥ यपादाष्ट

[illegible]

ॐ पादया ८१ निवर्तये निर्मसिगानमाकृतं ॥ न्यसद्वटिकाक (६) यूनमस्तु स्रष्टुपि (६) ॥ ६० ॥
कालरूपीनमस्तु सर्वपापयन्त्राहिनः ॥ विष्णुस्यवधाययथास्तु जाधायवेनमः ॥ ६१ ॥ नमः
८ कालभनीनाय कालरूपाय नमः ॥ कालरूपाय नमः ॥ कालरूपाय नमः ॥ ६२ ॥ नमः
९ मष्टमाताय त्वनाश्रयवेनमः ॥ कालदेवाय कालाय कालकालाय नमः ॥ ६३ ॥ निमत्या
दिमहाकल्प ८ कालरूपीनमस्तु सर्व ॥ मृत्युं जय महाकाल नमस्त्यामि ८ निष्पन्नं ॥ ६४ ॥ अकाल
मृत्युं हनन् मम मृत्युं निवानदी ॥ मृत्युं जय महाकाल नमस्त्यामि ८ निष्पन्नं ॥ ६५ ॥ इति
निष्कल्लभा मं शीघ्रं दीर्घं लाचनम् ॥ मृत्युं जय महाकाल नमस्त्यामि ८ निष्पन्नं ॥ ६६ ॥ य

लनीयः सद्यः सर्वगुहनिवानकी ॥ मृदुः सुखमहाकालः नमस्यामि ॥ निश्चयः ॥ ७५ ॥ कालस्य
 वधो गमसर्वं न कालकस्येति ॥ ७६ ॥ अतः स्यात्कालपूजार्थं सुदीर्घास्मिन्नेव नमो ॥ ७७ ॥ कालदेव
 उगत्सर्वं कालः नवपत्नीयः ॥ कालः नवपूजकः ॥ पूजायै नवसूत्रिणी ॥ ७८ ॥ कालः नवपूजकः सर्वगुह
 कालः सागुरुदेवता ॥ ७९ ॥ चण्डिकायाः कल्पिता ॥ कान्तवर्णा सउच्चर ॥ विशुद्धा कलिनी न
 श्रीमन्मन्त्रोदानसाधिका ॥ ८० ॥ चण्डिकायाः कल्पिता ॥ कान्तवर्णा सउच्चर ॥ विशुद्धा कलिनी न
 सा कलिनी सा विशुद्धा यून ॥ ८१ ॥ नमो गामनन्दिन्यै ॥ ८२ ॥ निगुहिक नमो ॥ ८३ ॥ आद्यकेशा न
 गते मनमनः कथयन् ॥ ८४ ॥ यय ॥ ८५ ॥ कृष्णयादा पिष्ठा त्वासीत् पूजिता ॥ तस्य मृदुः स्यात्सर्वं

वधो नववर्षावधि चिय ॥ ८६ ॥ इति ॥ सर्वविनष्टा कि द्रुविष्णु टकटका ॥ दिवा ॥ अस्मिन्नेव नमो
 गोमहाकालः सुखयय ॥ ८७ ॥ इति ॥ सर्वविनष्टा कि द्रुविष्णु टकटका ॥ दिवा ॥ अस्मिन्नेव नमो
 गतो वाचाष्टमपिवा ॥ ८८ ॥ तद्रुद्रा मोहवेद्या वध ॥ ८९ ॥ वादिना वधि ॥ चण्डिकायाः कल्पिता ॥ कान्तवर्णा सउच्चर
 फमनवर्षवम ॥ ९० ॥ तत्र नमः नमः ॥ दक्षिणायतः दक्षिणायतः ॥ गुन्नाद्यवस्तुनः प ॥ ९१ ॥
 नतिर्नववर्षा ॥ ९२ ॥ इति ॥ सर्वविनष्टा कि द्रुविष्णु टकटका ॥ दिवा ॥ अस्मिन्नेव नमो
 उपवृत्त ॥ ९३ ॥ महाकालाय नमः ॥ ९४ ॥ कथं वा जलसिनि ॥ ९५ ॥ वृद्धकैः ॥ ९६ ॥ सुखयय ॥ ९७ ॥
 ह ॥ ९८ ॥ नियमनेक रक्तं न ॥ ९९ ॥ चण्डिकायाः कल्पिता ॥ कान्तवर्णा सउच्चर ॥ विशुद्धा कलिनी न

८५॥ परं स्वस्ति यद्यपि स्वस्ति स्तौतुं मृत्युं जयति ॥ कालकृतकथितं न्यासकृतमस्मिन्निर्दिष्टं ॥
८६॥ पातककालं विचिंत्य प्रजापतिं निवेदयामहे ॥ यत्तन्निवेदयामहे न्यासकृतमस्मिन्निर्दिष्टं ॥ ८७॥
नामिहानेन जलाद्यानां दिग्बलं दृष्टव्यं नथवा ॥ नाकालमनर्थां न्यासकृतं यत्तन्निवेदयामहे ॥ ८८॥ आ
युवर्षात्तन्निवेदयामहे यत्तन्निवेदयामहे ॥ नातः पतन्निवेदयामहे ॥ नातः पतन्निवेदयामहे ॥ ८९॥ अतः
दीर्घायुं कुरु स्तौतुं मृत्युं जयति ॥ तस्मात्सर्वयत्नेन यदि कदा नमो हितमो ॥ ९०॥ अथ नी
र्यं महादेवी नतन्मम्यस्य कस्यचित् ॥ ९१॥ ॐ मिथुनी मार्गं शुक्लं नवतन्तुं ॥ ९२॥ अथ न्यासकृतं
स्वादि महाकालं निवेदयामहे मृत्युं जयति ॥ समाप्तं ॥ ९३॥ ॐ नमः ॥